RESEARCH PAPERS

RAYAT-BAHRA UNIVERSITY
Mohali

नारी अस्मिता के उभरते प्रश्नः कठगुलाब के सन्दर्भ में

Ms. Preet Arora
Asstt. Prof.
School of Education
Rayat Bahra University, Mohali

नारी अस्मिता के उभरते प्रश्नः कठगुलाब के सन्दर्भ में

आधुनिक कथा-साहित्य की वरिष्ठ लेखिका ‘मृदुलागर्ग’ नारी-जीवन की व्यापक पृष्ठभूमि पर अपने उपन्यासों की संरचना करती हैं। ‘कठगुलाब’ इनका बहुचर्चित नारीवादी उपन्यास है। इसमें पुरुष द्वारा प्रताड़ित नारी-पात्रों के मार्मिक चित्रण के साथ ही नारी की अपनी अस्मिता को बनाए रखने की संघर्ष गाथा है। यह संघर्ष गाथा किसी स्वतन्त्र नारी-भाषा की तलाश की नहीं अपितु पात्र को उसके सम्पूर्ण अस्तित्व में अभिव्यक्ति देने की है। उपन्यास के सभी नारी-पात्रों की केन्द्रीय धुरी ‘नारी-अस्मिता’ है। उपन्यास में नारी-पात्र जैसे-स्मिता, मारियान, नर्मदा, असीमा व दर्जिन बीबी (असीमा का माँ) अपनी स्वतन्त्र अस्मिता की खोज करके अपने व्यक्तित्व को सार्थक सिद्ध करते हैं। इनके अतिरिक्त स्पेन से आई रुथ, इटली से आई एलेना, स्कॉटलैंड से आई सूजन और पोलेंड से आई राक्जानॅ भी रिलीफ फॉर एब्यूज्ड विमेन ‘रॉ’ नामक संस्था में रहकर नए जीवन-मूल्यों की तलाश करती हैं। लेखिका ने उपन्यास में नमिता, गंगा, वरजिनया और नीरजा आदि नारी- पात्रों के संघर्षमयी जीवन को भी चित्रित किया है। इस सन्दर्भ में डॉ० मधु सन्धु कहती है ‘‘…पर्व और पश्चिम की, मध्यकालीन और आधुनिक प्रोढ़ा युवा और किशोरा, उच्च-मध्य एंव निम्न वर्ग की सभी नारियाँ अनवरत शोषण और प्रताड़ना से उकताकर प्रतिशोध और विद्रोह की मुद्रा में खड़ी है।’’[1]

वास्तव में उपन्यास के पुरुष-पात्रों द्वारा नारी को पताड़ित करक एव अस्मिता को नकार कर उसके व्यक्तित्व को विखण्डित किया जाता है, परन्तु यह सभी नारियाँ परिस्थितियों से पलायन न करके संघर्षरत होकर निज

व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। वे स्वंतन्त्र जीवनयापन करने और उपेक्षित जीवन से निजात पाने के लिए सकारात्मक विकल्पों का तलाश में जुटी रहती हैं। नारी-अस्मिता के प्रतीक ये सभी नारी-पात्र विविध प्रश्नों को उद्घाटित करते ह जैसे-

1. अधिकारों को प्राप्त करने के लिए नारी संघर्ष का प्रतीक- स्मिता
2. नारी को अबला बनाने वाली सोच से नारी संघर्ष का प्रतीक- मारियान
3. स्वतन्त्र अस्तित्व को स्थापित करने के लिए नारी संघर्ष का प्रतीक- नर्मदा
4. अत्याचारों के विरूद्व नारी संघर्ष का प्रतीक- असीमा
5. आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए नारी संघर्ष का प्रतीक-दर्जिन बीबी (असीमा का माँ)

1. **अधिकारों को प्राप्त करने के लिए नारी संघर्ष का प्रतीक-स्मिताः-** उपन्यास में स्मिता शुरू से लेकर अन्त तक अपने सुरक्षा के अधिकार को प्राप्त करने के लिए संघर्षरत होती है। स्मिता का बलात्कार उसके ही जीजा द्वारा किया जाता है परन्तु वह बलात्कार से उत्पन्न भय के कारण विरोध नहीं कर पाती। स्मिता सोचती है कि, ''मेरा मन मुझे धिक्कारता था, तो सिर्फ इसलिए कि मैनं प्रतिशोध नहीं लिया, भगोडा की तरह पलायन क्यों किया?''[2] स्मिता का विवाह जिम जारविस से हो जाता है और स्मिता का गर्भपात जारविस के कारण ही होता है। इसे वह अपना दूसरा बलात्कार समझती है जिसके कारण उसके हृदय में जारविस के प्रति प्रतिशोध की आग भड़क उठती है। स्मिता

जाराविस से बचकर 'रॉ' नामक संस्था में चली जाती है जहाँ वह मारियान से मिलकर जिम के खिलाफ मुकदमा लड़कर निरन्तर संघर्ष करती हुई अन्ततः समाज-सेवा में अपनी जिन्दगी को सार्थक बनाकर सुरक्षा का अधिकार प्राप्त करती है।

2. **नारी को अबला बनाने वाली सोच से नारी सघर्ष का प्रतीक -मारियानः-** मारियान एक सम्वेदनशील नारी-पात्र है। उसका पति इर्विंग ह्विटमैन उसे अबला मानकर न केवल उसका शैक्षिक शोषण करता है, अपितु उसको मातृत्व अधिकार से भी वंचित करता है। वह मारियान से दस साल तक तथ्यात्मक सामग्री इकट्ठी करवाकर एक उपन्यास की सृर्जना करता है। उपन्यास के सृजन के बीच मारियान विवाह के चार वर्ष बाद गर्भवती होती है। उसका पति उपन्यास में बाधा न पड़े, अपनी इस स्वार्थसिद्ध के लिए यह कहकर कि 'महान कलाकृति' की रचना में बच्चा बाधक होगा उसका गर्भपात करवा देता है। पति प्रेम में समर्पिता बनी मारियान गर्भपात करवाकर अपने पति द्वारा छली जाती है। उसका पति उसे कहता है कि, ''जानती हो मारियान, यह उपन्यास हमारा मानस पुत्र है। तुम्हारे और मेरे विश्वास भरे अनुराग से निर्मित, हमारी साँझी चेतना में जन्म लेने वाला, एक अद्वितीय रचना-शिशु।''[3] उपन्यास 'वूमेन ऑफ द अर्थ' क नाम से छपने पर मारियान को अपना नाम कहीं भी नहीं मिलता। दुखी मारियान इर्विंग को छोड़कर गैरी कपूर के साथ दूसरा विवाह करती है। गैरी भी उसे अबला मानकर उसकी मातृत्व भावना का गला घोंट देता है। अन्ततः मारियान अपने सबल व्यक्तित्व का परिचय

देने के लिए गैरी कपर् को भी तलाक देकर अपनी वेदना को सृजनात्मक रूप देती है। वह लेखिका के रूप में उभर कर इर्विंग के समक्ष अपनी प्रतिभा का प्रमाण देकर उसे मात देती है।

3. **स्वतन्त्र अस्तित्व को स्थापित करने के लिए नारी संघर्ष का प्रतीक – नर्मदा: –** बचपन में नर्मदा माँ–बाप की मृत्यु के उपरान्त अपने बहन व जीजा के संरक्षण में रहती है। नर्मदा चूड़ियों के कारखान में काम करके पूरी कमाई जीजा को सौंप देती है। खेलने–कूदने की उम्र में पिंघलता काँच हाथ में लिए सुबह से शाम तक दौड़ती नर्मदा का शरीर इतना थक जाता है कि वह स्वय बताती है, ''हाथ दुख है। पाव दुखे है, आँख जले है, सिर में घुमेर उठे है।''[4] बाद में यही नर्मदा असीमा के सरक्षण में आकर नारी के अधिकार, सम्मान, आर्थिक निर्भरता व समानता आदि अनेक बातों की जानकारी प्राप्त करती है। जब उसका जीजा उसे वापिस लेने आता है। तो वह उस पर शरनी की तरह दहाड़ते हुए नारी–स्वतन्त्रता का जयघोष करती है, ''फिर कभी इस घर में आने की हिम्मत की तो दोनों टाँगें तोड़ के सड़क पर फेंक दूँगी। कमा–कमा के तुझे खिलाया मुस्टंड।...पहले जान लेती तो तुम दोनों की बोटी–बोटी काट के चील–कौवों को खिला देती। हिम्मत हो तो आ मेरे सामने।''[5]

4. **अत्याचारों के विरूद्व नारी संघर्ष का प्रतीक – असीमा: –** उपन्यास में असीमा स्वतन्त्र विचारों वाली बोल्ड नारी है। उसके अनुसार पितृसत्तात्मक समाज द्वारा किए गए अत्याचारों का विद्रोह करने के लिए न केवल आर्थिक रूप से सक्षम होना अनिवार्य है। अपितु शारीरिक रूप से

सबल एव शक्तिशाली होना भी आवश्यक ह। स्मिता के होम साईस में दाखिला लेने पर असीमा उसे समझाने की कोशिश करती है कि उसे पढ़ाई के मुकाबले पहले नौकरी करके अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। वह स्मिता को कहती है, '' बेवकूफ है, मुझे देख, मैनें अपनी नौकरी के पहले चार महीनों की तनख्वाह कराटे सीखने में खर्च की है। मर्दो की दुनिया में रहने के लिए होम साईस नहीं, कराटे की जरूरत है।''[6] असीमा की भाषा में ही पुरुष द्वारा किए गए अत्याचारों के प्रति विदाहात्मक स्वर प्रस्फुटित होता है। वह अपने नाम की तरह ही किसी सीमा या बन्धन में बँधकर किसी प्रकार का अत्याचार सहन नहीं करना चाहती। अपने पति के अत्याचारों से पीड़ित स्मिता की सुरक्षा करते हुए उसके पति से स्मिता कहती है, ''अगर तने स्मिता को ढूढ़ने की कोशिश की या फिर कभी अपने बीवी पर हाथ उठाया तो समझ ले, पीट-पीटकर तुझे अपाहिज बना दूँगी।''[7]

5. **आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए नारी संघर्ष का प्रतीक दर्जिन बीबी:-** जहाँ दर्जिन बीबी में परम्परागत भारतीय संस्कारों की मान्यता है, तो वह उसमें नारी के स्वतन्त्र अस्तित्व की पहचान भी है। वह पति रूपी पुरुष की छत्र छाया में ही सुरक्षित जीवनयापन करने की धारणा को खण्डित करके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती है। उसके पति ने यदि वैवाहिक सम्बन्ध की अनन्यता को तोड़कर उसे ठेस पहुंचाई है तो समाज, धर्म, अदालत के द्वार खटखटा कर दया, सहानभुति और आर्थिक सहायता पाना उसे अभीष्ट नहीं है। वह कहती है, ''जिसने मेरे आत्मसम्मान को चाट पहुँचाई, उससे पैसा क्यों लूँ।''[8] यही आत्मसम्मान उसे पति से अलग रहकर अपने बच्चों का आर्थिक भार खुद उठाने का साहस देता है। वह सिलाई मशीन के सहारे

अपने दोनों बच्चों का भरण-पोषण अच्छे ढग से करके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती है। लेखिका 'रोहिणी अग्रवाल' दर्जिन बीवी के इसी आत्मविश्वास को दूसरी नारियों के लिए प्रेरणा का विषय मानते हुए कहती है, ''इतनी दिलेरी इतना आत्मविश्वास आखिर कितनों में होता है- वह भी तब जब सिलाई मशीन के अलावा हाथ में न शिक्षा हो, न हुनर।''[९]

इस प्रकार कठगुलाब में लेखिका ने नारी-पात्रों को पुरुष वर्चस्ववादी व्यवस्था से भिड़ते-टकराते, दबाव झेलते व अपनी अस्मिता की खोज करने के लिए संघर्षरत दिखाया है। परिणामस्वरूप कठगुलाब उपन्यास पुरुष स्वामित्व की स्थिति के विरूद्ध नारी के प्रतिरोध एवं विद्रोह से उत्पन्न संघर्ष का साक्ष्य प्रस्तुत कर नारी-अस्मिता के विविध प्रश्नों को उभारता है।

सन्दर्भ सूची

1. सन्धु, डॉ० मधु महिला उपन्यासकार, दिल्ली, निर्मल पब्लिकेशस् 2000, पृ० 72
2. गर्ग, मृदुला, कठगुलाब, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,1996, पृ० 32
3. वही, पृ० 87
4. वही, प० 125
5. वही, पृ० 178
6. वही, पृ० 17
7. वही, पृ० 167
8. वही, पृ० 156
9. रोहिणी, अग्रवाल, मृदुला गर्ग का स्त्री विमर्श: साझी दुनिया का स्वप्न, लेख, पुनश्च, संपादन दिनेश द्विवेदी, दिल्ली, कौशल कम्प्यूटर्स, जून 2004, पृ० 48

प्रीत अरोड़ा
शोध – छात्रा
हिन्दी – विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय
चण्डीगढ़ – 160014

मेरा पता है –
Miss Preet Arora
H.No. 405, Back Side Gurudwara.
Dashmesh Nagar. KHARAR.
Distt. MOHALI. Ph. – 98147-51994
08054617915